Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

35

समकालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नरॉ का आर्थिक जीवन संघर्ष

महेश भीमराव कोळी
शोधार्थी
पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होळकर सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

अर्थ है तो मनुष्य का जीवन है .अर्थ के बिना मनुष्य का जीवन अपूर्ण है . व्यक्तिगत , सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास के लिए अर्थ की आवश्यकता होती है . सभी सामाजिक नीति-नियम का मूल आधार अर्थ ही रहा है . इस अर्थ के कारण समस्त धर्म –अधर्म , न्याय – अन्याय आदि टिका हुआ है . वर्तमान परिवेश पर यदि दृष्टिपात करें तो रिश्तें-नाते , सगे-संबंधी , श्रेष्ठ-कनिष्ठ , उच्च-नीच आदि का आधार अर्थ ही रहा है . अर्थ के बिना व्यक्ति का अस्तित्व शून्य हो जाता है . समय के साथ-साथ बुनियादी आवश्यकताओं के साथ ही रोजगार की मांग भी बढती जा रही है . भारत के प्रत्येक नागरिक को भारतीय संविधान ने मौलिक अधिकार प्रदान कर सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार दिया है . ध्यातव्य दृष्टि से देखा जाय तो भारत के प्रत्येक नागरिकॉ के लिए दिया है किंतु याह समानता का अवसर तथा अधिकार स्त्री-पुरुष के दैहिक ढांचे के बाहर नही जा पाया परिणामस्वरूप तृतीय लिंगी के रूप में जन्मे शरीर को तय किए हुए स्त्री-पुरुष के सांचे से बाहर कर दिया जो मुख्य सभ्य समाज से कटकर , अलग-थलग जीवनयापान करनेवाले किन्नरॉ को आज भी आर्थिक जीवन संघर्ष करते हुए अपना जीवन व्यतित कर रहे हैं . शिक्षा , रोजगार की अनुपलब्धता ने , सामाजिक तिरस्कार के कारण आर्थिक कठिनाईयां उभरकर आ रहे हैं . इसकी ओर दृष्टिपात करते हुए समकालीन रचनाकारॉ ने अपने उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया है .

हाशिए पर जीवनयापन करनेवाले किन्नर शैक्षिक तथा सामाजिक दृष्टि से पीछडे होने के कारण रोजगार के क्षेत्र में स्थान नही मिल पा रहा है . मजबुरीवश किन्नर अपने जीवन निर्वाह के लिए अपने परंपरागत पेशे पर ही निर्भर रहना पड रहा है . आधुनिकता तथा मुक्त बाजारीकरण के कारण इनके पेशे पर कुठाराघात किया है . इसके करण उन्हें आर्थिक दयनीय स्थिति में जीवनयापन करना पड रहा है . इसके संदर्भ में लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी कहती है – " हिजडॉ के पास बुद्धि नहीं होती ? उसके पास प्रतिभा नहीं होती ? बल नही होता ? वह राजनीति में नहीं जा सकते ? फौज में नहीं जा सकते ? इन बातों को किन तर्कों के आधार पर तय किया गया ? आपने , कलाकारॉ , प्रतिभावानॉ को मजबूर कर दिया पचास-पचास रुपए में देह बेचने को , ताली बजाने को ? '' [1] किन्नरॉ में प्रतिभा होती है किंतु सभ्य समाज के दृष्टिकोण के कारण वह आगे आने में असमर्थ रह रही है . अपनें आर्थिक संघर्ष को झेलते हुए तथा परंपरागत व्यवसाय में जकडकर बधाईगिरी , नृत्य-गान करना , दूसरों को शुभाशिष देने पर ही आश्रित होना पड रहा है . किन्नर होने के कारण इन्हे सभ्य समाज का नकारात्मक दृष्टिकोण ने आर्थिक अभाव का सामना कर रहे है . नतीजा यह कि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती हेतू इन्हें बस में , ट्रेन में . दुकान पर , बाजार में , टोल नाके आदि पर भीख मांगना पड रहे है . इनका मुख्य व्यवसाय तो बधाईगिरी करना ही है . इस बधाईगिरी के संबंध में हमारे भारतीय संस्कृति में अनेक मिथ्य गाथा देखने के लिए मिल जाते हैं. इसके संदर्भ में ' तीसरी ताली ' नामक रचना में किन्नर डिम्पल की पालिता पुत्री मंजू अपने प्रेमी फोटोग्राफर विजय को बताती है – " हमारे बुजुर्ग बताते है कि जब भगवान राम-रावण को मार कर अयोध्या लौटे , तो वहां पर बडा भारी जश्न हुआ . रात भर नाच गाना . काफी रात बीतने के बाद भगवान राम ने कहा अब सभी नर –नारी घरों को जाए . भगवान राम ने यह आदेश नर और नारियों को दिया था . लिहाजा जो नर या नारी नही थे , वे वही रह गए . भगवान राम के आदेश का उल्लंघन भला वे कैसे कर सकते थे . राम तो मर्यादा पुरुषोत्तम थे . उन्हें जब यह बात पता लगी , तो उन्होंने तीसरी योनि के उन लोंगो को नाचने-गाने का वरदान दे दिया . बस तभी से यह लोग नाच गा रहे हैं . '' [2] परंपरागत रूप से यही रोजगार का एकमात्र विकल्प होने के कारण जो कुछ भी बधाईगिरी से प्राप्त होते हैं उनमें ही उन्हें गुजारा करना पड रहा है . किन्नरॉ द्वारा बधाईगिरी को स्पष्ट करते हुए लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी कहती है – " असल परंपरा से बधाई बजाना उनका प्रमुख व्यवसाय है . किसी के भी घर में बच्चा पैदा होने पर , घर में शुभ कार्य होने पर , लोग हिजडॉ को बुलाते हैं . बच्चे को , नए जोडे को आशीर्वाद देने जाते हैं . हिजडे नाच-गाना करते हैं और अपना आशीर्वाद देते हैं . पर ऐसे कितने लोग बधाई करेंगे ? उनमें से कितनॉ का पेट भरेंगे ? इसलिए बहुत से अलग-अलग जगहॉ पर भीख मांगते हैं. कुछ तो सेक्स वर्क करते हैं कुछ लोग बार में नाचने के लिए जाते हैं . ये कला तो रहता ही है हिजडॉ में ....." [3] परिवर्तित स्थितियों में आज उन्हें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड रहा है . ग्रामीण से शहरॉ की ओर पलायनवादी तथा प्लैट संस्कृति ने किन्नरॉ की आर्थिक कमर ही तोड दी . आधुनिकता के कारण किन्नरो की व्यवसाय में मंदी आयी है . जैसे –तैसे गांव में आज भी उन्हें बधाईगिरी मिलती है परंतु नगरॉ में वास करनेवाले किन्नर समुदाय को आर्थिकता के संघर्ष को झेलना पड रहा है . नगरॉ में बने बहुमंजिला इमारते , बंद दरवाजे संस्कृति ने किन्नरो को कुछ भी ज्ञात न होने तथा सुरक्षा प्रहरी के रोक के कारण किन्नरॉ को आर्थिक अभाव का सामना करना पड रहा है . जनसंख्या वृद्धि के साथ ही वृद्धिगत होती हुई सोसायटी , प्लैट के कारण किन्नरॉ के परंपरागत व्यवसाय में आयी हुई मंदी के संदर्भ में ' यमदीप उपन्यास की किन्नर गुरु मेहताब पत्रकार मानवी को बताती है कि – " जब से शहरॉ में ऊंची –ऊंची बिल्डींगो की बढोत्तरी हुई है , उसके धंदे में मंदी आई है . पहले तो मोहल्ले में घुसते ही किसी ना किसी हंसी

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

मजाक में पता चल जाता था कि किस घर में बच्चा पैदा हुआ है , पर अब तो बच्चे भी कम पैदा हो रहे है और उस पर से चार पांच मंजिल वाली बिल्डींगो में तो उन्हें कोई घुसने ही नही देता . सभी अपना-अपना दरवाजा बंद किए घरॉ में कैद . किसी को किसी से मतलब ही नही . पडोस में किसके घर ख़ुशी पडी या गमी , इससे भी बेखबर रहते है लोग . '' [4] किन्नर गुरु का यह वर्णन यथार्थवाद को दर्शाती है , क्योंकि वन या टू बीएच के में भारतीय समाज सिमट गयी है . बाहरी दुनिया से उसे कोई लेना-देना नही होता . समष्टि से व्यष्टि को ओर वृद्धिगत होती हुई संस्कृति आनेवाले भविष्य में घातक साबित हो सकता है .

परंपरागत व्यवसाय तथा रोजगार साधनॉ का अभाव और आर्थिक कमी के कारण किन्नर वेश्यावृत्ति जैसे क्षेत्र का चयन करने के लिए विवश हो जाते है . न चाहते हुए भी अर्थात साक्षात मृत्यु को गले लगाने लिए विवश हो जाते है . परिवार तथा समाज से परित्यक्त होने कारण , सामाजिक अवहेलना को झेलते हुए जीवनयापन करने के लिए इस क्षेत्र की ओर किन्नर खींचे चले जा रहे है . इसमें भयानक रोगों का संक्रमण होकर तिल-तिल कर मरने के लिए तैयार हो जाते है . किन्नर समुदाय की व्यवस्था , धन कमाने की लालसा , कम मेहनत अधिक पैसा , परंपरागत व्यवसाय में आयी हुई आर्थिक मंदी आदि कारण हो सकते है जिसमें अपनी जरुरतें पूर्ण करने में समस्याओं का निर्माण हो रहा है . वैसे देखा जाय तो किन्नर मंडली के गुरु इस तरह की अनुमति नही देते किंतु उपरोक्त कारणों के कारण वह भी गिरीया रखने की सलाह देते हुए दिखाई देते है . परंतु गुरु के अनुमति के बिना वेश्यावृत्ति करते हुए अनेक किन्नर रोगग्रस्त होकर मृत्यु शैय्या पर देखते हुए यम दीप की किन्नर गुरु अपनी शिष्या नाज को बताती हुई कहती है – " चोरी-छिपे यहां जो धंदा चल रहा है उसका फल तो तुम देख ही रहे हो . जुबैदा चल बसी और अब सोबराती की बारी है . '' [5] उन्हें पूर्णत : ज्ञात है कि इस धंदे में केवल मौत प्राप्त हो सकती है परंतु कम्बख्त पेट की भूख ने इस दलदल में फंसती है .

किन्नर समुदाय में धन हेतू भी संघर्ष दिखाई पडता है . प्रत्येक व्यक्ति हर समय सुचारू रूप से जीवनयापन करने का प्रयास करता है . अर्थ प्राप्ति के लिए वह किसी भी हद तक मनुष्य जा सकता है . समकालीन परिवेश में हर स्थान पर , प्रत्येक डेरों पर धन हेतू आपसी संघर्ष दृष्टिगोचर होता है . मनुष्य मूलत : लालची होता है तो इसमें किन्नर कैसे अलग रह सकता है ? वह भी सामान्य मनुष्य की तरह अर्थात इनमें भी भावनाएं , आशा-आकांक्षाएं निहित होती है . किन्नर गद्दी को प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष दिखाई देता है . किन्नर गुरु का काम होता है अपनी पुश्तैनी खजाने की रक्षा कर अपनी मंडली को संभालते हुए आगे संप्रेषित करना . इस लालच में कभी-कभी किन्नर गुरु की हत्या भी की जाती है . विविध मंडली के गुरु गद्दी को लेकर आपसी संघर्ष दृष्टिगोचर होता है . ' तीसरी ताली 'उपन्यास में गुरु गद्दी को लेकर किन्नर चंदाबाई की हत्या हो जाती है . गद्दी पर अधिकार जमाने हेतू गोपाल जासिये सामान्य व्यक्ति भी किन्नर बनता है . ऐसे कई घटनाएं समकालीन उपन्यासों में दिखाई देते है . इनका सबसे बडा संघर्ष तो नकली बने किन्नरों द्वारा होने लगता है . प्रत्येक किन्नर मंडली का क्षेत्र निश्चित होता है और उसी में ही वे बधाईगिरी कर अपना जीवन निर्वाह करते है . नकली बने किन्नर अपराधी प्रवृत्ति के होने के कारण उनके साथ दो –दो हाथ भी करने पडते है . इन नकली किन्नरो के करण सामाजिक दूरियां बढती ही जा रही है . ' किन्नर कथा ' उपन्यास में तारा के डेरे पर कुछ स्त्रैण स्वभाव तथा कुछ आर्थिक अभाव के करण किन्नर बने हुए है . अपनी परंपरागत बधाईगिरी करने से पूर्व ही " नकली किन्नर पहुंचकर उनका हक हडप कर रफूचक्कर हो जाते है . पैसे उगाहने के एकमात्र लक्ष्य के साथ नकली किन्नर अच्छे बुरे सभी तरह के कार्य करने लगे है . '' [6] याह नकली किन्नर पैसे न देने पर भौंडी हरकतें करने लगते है जिसकी सजा असली किन्नरों को भुगतना पड रहा है . सामाजिकता में नकारात्मक भूमिका में वृद्धि हो रही है .

अर्थाभाव तथा बेरोजगारी के करण कई सामान्य पुरुष भी साडी पहनकर , साज-सज्जा कर किन्नरों जैसी अभिनय कर लॉगो से पैसे हडप रहे है . प्रस्तुत उपन्यास में ही लंबू नामक सामान्य व्यक्ति नकली किन्नर बनकर किन्नर गुरु तारा के डेरे के सामने ही अपना डेरा डालकर गुरु पद पर आसीन होता है . सभ्य समाज के कुछ सामाजिक का भी इसे प्रोत्साहन मिलता है . वह धीरे-धीरे कर नकली किन्नरों का एक फौज खडा कर उन्हें वेश्यागिरी तथा भिक्षा मांगने के धंदे में धकेल देता है . परिणामस्वरूप असली किन्नरों को आर्थिक संकट में डाल देता है . अपने लाभ के लिए नकली बने किन्नर अनैतिक कार्य करने में पीछे नही हटती . ' अस्तित्व ' उपन्यास में भी नकली बने किन्नर का वर्णन मिलता है और अनैतिक मार्ग से पैसे वसूलने के संदर्भ में किन्नर प्रीत की बहन कहने लगती है – " मैने तो यह भी सुना है कि , आजकल कुछ मक्कार आलसी लोग किन्नर का भेष बनाकर ट्रेन और बसों में भी उगाही करते है . '' [7] नकली किन्नरॉ के कारण सभ्य समाज की नकारात्मक छवि को स्पष्ट करने की कोशिश किया है . इन नकली किन्नरॉ के कारण मात्र असली किन्नरॉ को अपने जीवन में आर्थिक संघर्ष का सामना करना पड रहा है.

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आधुनिकता के कारण परंपरागत व्यवसाय में आयी हुई मंदी , धन हेतू आपसी संघर्ष , नकली किन्नरों की बढती संख्या ने , सभ्य समाज की नकारात्मक प्रवृत्ति के कारण किन्नर को अपने जीवन में आर्थिक संघर्ष के संदर्भ में समकालीन उपन्यासों में दृष्टिपात करने में सफल हुए है .

संदर्भ संकेत :

1 मैं हिजडा ..... मै लक्ष्मी - लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी , अनु. शशिकला राय , सुरेखा बनकर , वाणी प्रकाशन , 4695 , 21 –ए दरियागंज , नई दिल्ली 1100 0 2 , पृ. – 55
2 तीसरी ताली – प्रदीप सौरभ , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम सं . 2011 , पृ. 165
3 . मैं हिजडा ..... मै लक्ष्मी - लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी , अनु. शशिकला राय , सुरेखा बनकर , वाणी प्रकाशन , 4695 , 21 –ए दरियागंज , नई दिल्ली 1100 0 2 , पृ. – 45
4 यमदीप – नीरजा माधव , सुनील साहित्य भवन , नई दिल्ली , सं. 2009 , पृ. 42
5 वही – पृ. 28
6 किन्नर कथा – महेंद्र भीष्म , सामायिक प्रकाशन , नई दिल्ली , सं. 2016 , पृ. 60
7 अस्तित्व – गिरीजा भारती , शब्दांगन प्रकाशन , बरेली , सं. 2017 , पृ. 41